गणपति विघन हरण सुख दाता

गणपति विघन हरण सुख दाता
==========
गणपति, विघन, हरण सुख दाता xII-II
हो,,, शिव, शंकर है, पिता तुम्हारे* ॥,
पार्वती* है माता,,,
गणपति, विघन, हरण सुख दाता xII-II

एक, दंत, गज़ बदन तुम्हारा ॥
रवि, समान, कुंडल चमकारा ॥
सुन्दर* सूँड सुहाता,,,
गणपति, विघन,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,F

फूल, हार, ग़ल मोतियन माला ॥
केसर, तिलक, विराजत भाला ॥
मोदक* भोग लगाता,,,
गणपति, विघन,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,F

शंख, गदा, त्रिशूल विराजे ॥
रूप, देखकर, मन मत लागे ॥
पूर्ण* पुर्ख विधाता,,,
गणपति, विघन,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,F

जन, अनाथ की, बेनती मानो ।
सब, भक्तों की, बेनती मानो ।
मोहे, अपना, सेवक जानो ।
सबको, अपना, सेवक जानो ।
तेरी भक्ति* करूँ दिन राता,,,
गणपति, विघन,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,F

अपलोडर- अनिलरामूर्तीभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/31819/title/ganpati-vighan-haran-sukh-data

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |